21.4.20

B.A. Part-I Social Psychology

Q. महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों की व्याख्या करें।

Ans. समाज मनोविज्ञान एक ऐसा मनोविज्ञान है जिसमें सामाजिक मनो-वैज्ञानिक शोध तथा अभ्यासों का उपयोग वास्तविक पर्यावरणी परि-स्थिति में इस उद्देश्य से होता है कि विभिन्न तरह के सामाजिक समस्याओं का समाधान हो सके। शोध का एक मुख्य अनुप्रयोग व्यक्ति के स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याओं के समाधान में है जिसे हम स्वास्थ्य व्यवहार का मनोविज्ञान कहा जाता है।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक में व्यक्ति के स्वास्थ्य को उन्नत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कारक है।

(i) मनोवैज्ञानिक तनाव से नकारात्मक दैहिक परिवर्तन उत्पन्न होता है।

(ii) अर्जित स्वास्थ्य आदत व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए उत्तम होता है लेकिन वे कभी-कभी हानिकारक भी साबित होता है।

(iii) व्यक्तित्व शीलगुण में विशिष्ट बीमारी उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

(iv) व्यक्ति किस तरह से बीमारी से निपटता है, वह उतना ही महत्वपूर्ण हो सकता है जितना यह कि वह किस तरह से स्वास्थ्य देख-रेख तंत्र के साथ निपटता है।

(v) धूम्रपान करने वालों द्वारा धूम्रपान नहीं करने वाले की अपेक्षा अल्को-हल तथा कॉफी का भी उपयोग किया जाता है।

(vi) वैसे रोगी जो अपनी बीमारी के साथ उत्तम ढंग से समायोजित हैं, में कैंसर से लड़ने वाली दैहिक अनुक्रियाएँ तुलनात्मक रूप से अनुप्रभावी होती है।

स्वास्थ्य व्यवहार के क्षेत्र में कुछ ऐसे मनोवैज्ञानिक पूर्ववर्ती कारक हैं जिनसे स्वास्थ्य देख-रेख व्यवहार काफी अधिक प्रभावित होता है। जो निम्नांकित है।

(A) जीवन आतंकक →

व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घटती है

जो आसेवक के रूप में होती है और उससे स्वास्थ्य प्रभावित होता है कुछ मनोवैज्ञानिक का कहना है कि अवांछित घटना व्यक्ति के आत्म-संप्रत्यय एवं सामाजिक प्रतिमा को कुप्रभावित करता है जिससे व्यक्ति के जीवन आसेवकों के साथ निपटने की क्षमता कम हो जाती है।

कुछ ऐसे अध्ययनों से यह पता चलता है कि किसी बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों द्वारा किस तरह के जीवन आसेवकों की अनुभूति की गयी है। गुप्ता एवं श्रीवास्तव (1983) ने यक्ष्मा तथा छाती के रोगियों का एक-साल तक अनुवर्ती अध्ययन में पाया कि ऐसे रोगियों जिन्होंने गत एक साल की अवधि में कोई भी तनावपूर्ण घटना का अनुभव नहीं किया। ऐसे रोगी बाल्यावस्था में संवेगिक वंचन से प्रभावित हुए थे। इनकी माताओं में व्यक्तित्व के असामान्य शील गुण थे इसके आरंभिक अवस्था से ही घबड़ाहट की परिस्थिति में त्वचा को नोचने, रगड़ने आदि की आदत विकसित की गयी थी। अतः निष्कर्ष में हमें कोई भी बीमारी के पीछे एक आसेवक नहीं होकर अनेकों आसेवकों का एक संचयी प्रभाव होता है।

(B) चित्तवृत्ति कारक :→

समाज मनोवैज्ञानिक द्वारा किये गये शोधों के आधार पर पता चला है कि विभिन्न रोगों के रोगियों में किस तरह के व्यक्तित्व शील गुण साहचर्यित होते हैं एच० आई० भी० रोगियों की चिंता, विषाद आदि एच आई भी ऋणात्मक रोगियों की तुलना में अधिक थे। इसी तरह से वैद्य श्रीवास्तव एवं श्रीवास्तव ने कैंसर रोगियों को हाइपरटेंशन रोगियों के साथ तथा दो नियंत्रित समूहों जो आयु, यौन, एवं शिक्षा पर आधारित थे, तुलना किया और पाया गया कि कैंसर तथा हाइपरटेंशन रोगियों द्वारा सामान्य प्रयोज्यों या नियंत्रित प्रयोज्यों की तुलना में स्नायुविकृति अधिक थी।

Scanned by TapScanner

कुछ अध्ययनों से यह पता चलता है कि एक विशेष तरह का व्यवहार पैटर्न जिसे टाइप ए व्यवहार पैटर्न कहा जाता है कोरोनरी हृदय रोग से साहचर्यित होता है टाइप ए व्यवहार पैटर्न एक ऐसा पैटर्न होता है जिसमें व्यक्ति में अत्यधिक प्रतियोगिता का भाव, समय पर कार्य करने की बाध्यता, किसी कार्य में जरूरत से ज्यादा आवेष्टन, ईर्ष्या, आक्रमकता, आदि मुख्य रूप से दिखलाते हैं। टाइप बी व्यवहार इसका विपरीत पैटर्न होता है जिसमें व्यक्ति अधिक तनाव मुक्त, दार्शनिक एवं खुशी की अवस्था में होता है

चित्तवृत्ति कारक से सम्बंध के आधार पर तब हम निष्कर्ष रूप में कहते हैं कि दैहिक स्वास्थ्य व्यवहार का साहचर्य व्यक्तित्व के विशेष तरह के शील-गुण एवं व्यवहार का साहचर्य व्यक्तित्व के विशेष तरह के शीलगुण एवं व्यवहार के साथ होता है।

(c) स्वास्थ्य जोखिम व्यवहार:-

स्वास्थ्य जोखिम व्यवहार से तात्पर्य वैसे व्यवहार से होता है जिसे व्यक्ति प्रायः आदतन अपने जीवन में करता है लेकिन उससे उसे कोई बीमारी होने का जोखिम बढ़ जाता है। जिसमें कैंसर एवं हृदय रोग के होने की सम्भावना काफी बढ़ जाती है। इसका दावा है कि इन रोगों से होने वाले मृत्यु का करीब २५% केसेज को धूम्रपान की आदत को छुड़ाकर बचाया जा सकता है पी० गुप्ता एवं ललवानी ने हेरोइन व्यसनी की तुलना कॉलेज के ऐसे छात्रों से किया जिसमें किसी प्रकार का कोई व्यसन की आदत नहीं थी। इसका परिणाम में यह देखा गया कि हेरोइन व्यसनी को अपने माता-पिता के साथ संबंधात्मक समस्याएँ थी तथा यहाँ तक की अपने आत्म-सम्प्रत्यय के साथ भी ये लोग ठीक ढंग से संबंध स्थापित नहीं कर पाते थे। अव्यसनी छात्र वैसे परिवार से आते थे जिसमें धार्मिकता का गुण तुलनात्मक रूप से अधिक था।

Scanned by TapScanner

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि मनोवैज्ञानिक द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि स्वास्थ्य व्यवहार चाहे उसका संबंध मानसिक बीमारी से हो या दैहिक बीमारी से निश्चित रूप से कुछ कारकों जैसे जीवन घटनाएँ, मनोवृत्ति तथा स्वास्थ्य जोखिम कारक आदि से प्रभावित होते है।

Dr. Randhir Kumar
Dept of Psychology
U.R.C. Rosera Samastipur
9570435959 9431852588
22/04/2020

Scanned by TapScanner